Brief History of the Sanskrit:

The Department of Sanskrit in Hindi Mahavidyalaya, Vidyanagar, Hyderabad established in the year 1962 with different combination at UG level keeping in view the need for strengthening its Sanskrit language wing.

Objectives:

- To disseminate and advance knowledge by providing instructional, research and extension facilities for the promotion of Sanskrit language and such other branches of learning as it may deem fit.
- To make special provisions for integrated courses humanities, social sciences and science in its educational programmes.
- To take appropriate measures for promoting innovations teaching learning process and inter-disciplinary studies and research.
- To educate and train manpower for the overall development, promotion, preservation and research in the field of Sanskrit and Sanskrit traditional subjects.
- To include the habit of independent thinking and problem solving.
- To prepare the students reach out look for various fields
- Identify and focus the students to the current issues and challenges in the field of Sanskrit.

Outcomes:

Program outcome:

- Develop a strong concept of ancient Indian history, philosophy and literature.
- Enhance communication skills- listening, speaking, reading, writing.
- Students will be able to write Devanagari scripts which provide them the palegraphical knowledge to read out the script of modern languages like Hindi and Marathi.
- Increase in depth knowledge of the core areas of the subject.
- Students will demonstrate the skill needed to participate in conversation that builds knowledge with collaboration.
- Students will gain knowledge of the major traditions of literatures written in Sanskrit like Veda, philosophy, grammar, kavya etc.
- To make them eligible for profession of teacher, WBCS, UPCS etc.

Course outcome:

- After becoming successful completion of all undergraduate general degree students should be able to achieve the following objectives.
- Students will be able to know ancient Indian history of literature and literary criticism.
- Students would know about the Vedic mantras, their application, Vedic grammar, socio-cultural life.
- Grammar is very important part of this language to make a sentence, to know appropriate meaning of texts, oral communication and perfection. Grammar is the only way to know this language well.
- They will learn about the Indian philosophy, Religion and Culture in Sanskrit tradition.
- Through Gita they also develop their personality.
- Ayurveda will help them to know the Indian medical tradition.
- They will also know nation and nationalism through Sanskrit literature.
- The students will able to learn the yoga, their concept, features etc.

Courses Offered :

Under Graduate Level:B.Sc. (MPC, MPCS, MSCS, Mb.Bc.C, Mb.Bt.C)

BBA, B.Com

Present Faculty:

Name	Qualification	Designation	Specialization	No. of Years of Experience
Dr. Muktavani Shastri	M.A., M.phil., Ph.D	Associate Professor & Head of the Department Supervisor for O.U.	Sanskrit	
Smt. Maitreya Shastry	M.A	Assistant Professor	Sanskrit	
Smt. G. Vimala	M.A	Assistant Professor	Sanskrit	
Ms. S. Nandini	M.A. (Sanskrit)	Assistant Professor	Sanskrit	

CURRICULAR ASPECTS:

- In order to expose the student to practical language skills.
- In order to expose the students to language related competitions like quiz, singing, essay-writing etc.

Curriculum Enrichment Program:

To enrich the curriculum, the department has taken the following initiatives

- Guest / Extension Lectures are arranged by the experts in various colleges so that the students enrich their knowledge in the concerned subject.
- To Focus the students on various topics are given.

DEPARTMENTAL ACTIVITIES

From the Academic Year 2017 – 18 TO 2021 – 22

S. No.	Date	Name of the Activity	Details of the Resource person
01.	2017	Member of Board of Studies (O.U.)	Dr. Muktavani Shastri Head of Dept. HMV College
02.	2017-18	Members of academic Council	Department of Sanskrit Hindi Mahavidyalaya
03.	2017-18	Resource person accessed Through Youtube	
04	2017-18	Examiner for P.hd viva-voice	O.U.
05.	2017-18	Observer in T.S. Public Service Commission	

06.	2017-18	Member of Bos Nizam college	**Nizam College**
07.	2017-18	Member of Syllabus Committee	Womens college O.U.
08.	2017-18	Member of Governing Council	Autonomy

Departmental Activity Photos

हिंदी स्वतन्त्र वार्ता 20.7.2017

राष्ट्रीय संगोष्ठी का हुआ आयोजन

हैदराबाद, 19 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। हिन्दी महाविद्यालय, संस्कृत विभाग द्वारा एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। प्राचार्य ज्योति हस्तक ने महाविद्यालय का परिचय देते हुए स्वागत भाषण दिया।

अध्यक्ष सुरेंद्र लूणिया ने सभी विद्यार्थियों को संस्कृत अध्ययन के साथ-साथ राष्ट्र भक्त बनने की प्रेरणा दी। मंत्री लक्ष्मीनिवास शर्मा ने अध्यापकों से संस्कृत, संस्कृति एवं राष्ट्रप्रेम को विकसित करने का अनुरोध करते हुए, संस्कृत साहित्य के महत्व को रेखांकित किया। इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में उस्मानिया विश्वविद्यालय के प्रो. नीलकण्ठम् ने वेदों से लेकर आधुनिक संस्कृत साहित्य में उल्लिखित राष्ट्र भक्ति पर प्रकाश डाला।

राष्ट्रभक्तों का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि शिवाजी चरित, प्रताप विजय, विवेकानंद, दयानंद, भगतसिंह आदि सभी का चरित्र संस्कृत में उपलब्ध है। अध्यक्षीय भाषण देते हुए प्रो. रामुलू ने कहा कि संस्कृत भाषा और राष्ट्रभक्ति का अनिवाभाव संबंध है। हमें अपनी भाषा और राष्ट्र पर गर्व होना चाहिए। वेद का उद्धरण देते हुए आपने कहा कि यह भारत देश हमारी माता और हम सब इसके पुत्र हैं।

आंध्र विश्वविद्यालय के प्रो. वेंडुकोण्डलु ने लोकमान्य बालगंगाधर तिलक के जीवन चरित्र को आधार बनाकर राष्ट्रभक्ति का यथार्थ चित्रण करते हुए छत्रपति शिवाजी महाराज की शौर्यगाथा पर बड़े रोचक ढंग से प्रकाश डाला। जिनका अध्ययन कर विद्यार्थी राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत हो सकते हैं। संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ. मुक्ता वाणी ने संगोष्ठी का संयोजन तथा विषय प्रवर्तन प्रस्तुत किया। उद्घाटन सत्र में सभी के प्रति आभार ज्ञापन हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. रजनी धारी ने किया तथा हिंदी महाविद्यालय समिति के द्वारा अतिथियों का सम्मान किया गया।

द्वितीय सत्र में डॉ. रमा देवी, डॉ. विद्यानंद आर्य, डॉ. अनुपमा, डॉ. अनुसूया प्रसन्न लक्ष्मी, डॉ.ए. वरलक्ष्मी, डॉ. राजनारायण अवस्थी, डॉ. जोशी संतोष, श्रीमती मैत्रेयी शास्त्री, श्रीमती पद्मांजलि, श्रीमती गीता, श्रीमती नंदिनी, रामनारायण, डॉ. रजनी धारी ने प्रपत्र प्रस्तुत किये।

हिन्दी मिलाप 21.7.2017

हिन्दी महाविद्यालय में राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित

हैदराबाद, 20 जुलाई-(मिलाप ब्यूरो) ल्लाकुंटा स्थित हिन्दी महाविद्यालय के संस्कृत विभाग द्वारा राष्ट्रीय संगोष्ठी का ायोजन किया गया।

दीप प्रज्वलन के पश्चात रत्ना कॉलेज ी प्राध्यापिका मैत्रेयी शास्त्री ने वेद पाठ कया। महाविद्यालय का परिचय देते ए प्राचार्या ज्योति हस्तक ने उपस्थिजनों ा स्वागत किया और संस्कृत भाषा के हत्व को प्रतिपादित करने के लिए स्कृत विभाग को बधाई दी। अध्यक्ष रेन्द्र लूणिया ने विद्यार्थियों को संस्कृत ध्ययन के साथ-साथ राष्ट्र भक्त बनने ी प्रेरणा दी। मंत्री लक्ष्मीनिवास शर्मा प्राध्यापकों से संस्कृत, संस्कृति और ष्ट्र प्रेम को विकसित करने का आह्वान रते हुए संस्कृत साहित्य के महत्व को ांकित किया। मुख्य वक्ता के रूप उपस्थित उस्मानिया विश्वविद्यालय के नीलकंठम ने वेदों से लेकर आधुनिक स्कृत साहित्य में उल्लेखित राष्ट्र भक्ति समग्र नक्शा खींचा। वेद मंत्र एवं स्कृत के श्लोकों का प्रमाण प्रस्तुत

करते हुए उन्होंने राष्ट्र प्रेम के महत्व पर बल दिया। उन्होंने कहा कि शिवाजी चरित, प्रताप विजय, विवेकानंद, दयानंद, भगत सिंह आदि का चरित्र संस्कृत में उपलब्ध हैं। अध्यक्षीय भाषण देते हुए प्रो. रामुलु ने कहा कि संस्कृत भाषा और राष्ट्र भक्ति का प्रगाढ़ संबंध हैं। हमें अपनी भाषा और राष्ट्र पर गर्व होना चाहिए।

आंध्र विश्वविद्यालय के प्रो. येडुकोंडलू ने लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के चरित्र को आधार बनाकर राष्ट्र भक्ति का यथार्थ चित्रण किया। उन्होंने छत्रपति शिवाजी महाराज की शौर्य गाथा पर अत्यंत रोचक ढंग से प्रकाश डाला। संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ. मुक्ता वाणी ने विषय प्रवर्तन प्रस्तुत किया। उद्घाटन सत्र में हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. रजनी धारी ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया। हिन्दी महाविद्यालय समिति की ओर से अतिथियों का सम्मान किया गया। द्वितीय सत्र में रामबंद्रा डिग्री कॉलेज की प्राचार्य डॉ. रमादेवी, उस्मानिया विश्वविद्यालय के डॉ. विद्यानंद आर्य, हैदराबाद विश्वविद्यालय की डॉ. अनुपमा, वरंगल की डॉ. अनुसूया प्रसन्न लक्ष्मी, संस्कृत अकादमी की डॉ. ए. वरलक्ष्मी, ईसीआईएल गौरव के संपादक डॉ. राजनारायण अवस्थी, संस्कृत अकादमी के जोशी संतोष, रत्ना कॉलेज की मैत्रेयी शास्त्री, सिंगरेणी कॉलेज की पद्मांजलि, नंदिनी वुमेन्स कॉलेज, बेगमपेट की गीता, रामनारायण वैज्ञानिक, हिन्दी महाविद्यालय की डॉ. रजनी धारी प्रपत्र प्रस्तुत किए। प्रपत्र वाचकों को प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित करने के पश्चात डॉ. उपेन्द्र शास्त्री ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

हिन्दी मिलाप 14.9.2017

हिन्दी के भविष्य को सुनहरा बनाने में करें

हिन्दी भाषा विश्व व्याप्त है। आधुनिक युग में विश्व की अनेक उच्चस्तरीय शिक्षण संस्थाओं में हिन्दी का अध्ययन एवं अध्यापन हो रहा है। आज भी समस्त भारत में अनेक महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में नानाविध विषयों का पठन-पाठन हिन्दी माध्यम से कराया जा रहा है। दक्षिण भारत की मातृभाषाएँ- तेलुगु, कन्नड़, मलयालम और तमिल हैं, पुनरपि ऐसे अनेक विद्यालय और महाविद्यालय हैं जहाँ हिन्दी माध्यम में शिक्षा दी जा रही है। जैसा कि कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी ने कहा था- 'विद्या की कोई भी संस्था वास्तविक अर्थ में भारतीय नहीं कही जा सकती, जब तक उसमें हिन्दी के अध्ययन-अध्यापन का प्रबंध नहीं हो।'

हिन्दी सेवा समितियों द्वारा चलाये जा रहे शिक्षण संस्थानों का भविष्य उज्ज्वल है, उनमें रोजगार के भी आसार हैं। आवश्यकता इस बात की है कि हम हिन्दी भाषा को अच्छे ढंग से पूरी तन्मयता से सीखें। इसके व्याकरण, शैली एवं सुगठित वाक्य-संरचना का पूर्ण अभ्यास करें। इसमें आधे-अधूरे न रहें, क्योंकि एक अच्छा भाषाविद् ही सफल अनुवादक, हिन्दी अधिकारी, श्रेष्ठ प्राध्यापक, सुयश प्रोफेसर, उच्च शिक्षक तथा हिन्दी पंडित आदि पदों के साथ न्याय कर सकता है। जैसे चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य ने कहा था- 'भारत के सभी भागों में सारी शिक्षा का एक उद्देश्य हिन्दी का पूर्ण ज्ञान भी होना चाहिए।'

आज हिन्दी क्षेत्र से संबंधित सरकारी संस्थाओं में अनेक पद हैं। जहाँ सुयोग्य व्यक्तियों की आवश्यकता है, साथ ही उम्र की सीमा है। अत: युवावस्था में ही हमें भाषा की गहराई को समझना होगा। वाणिज्य, बैंक, फिल्म, दूरदर्शन, आकाशवाणी, रेलवे, लोकसभा, राज्यसभा, विधानसभा, पत्रकारिता, संपादन, हिन्दी डी.टी.पी. और प्रूफ रीडिंग आदि ऐसे बहुव्यापक क्षेत्र हैं, जहाँ बृहत् रोजगार हैं। सम्प्रति केंद्र सरकार भी हिन्दी में कार्य करने हेतु प्रोत्साहित कर रही है, जिससे हमें लाभान्वित होना चाहिए।

इस प्रकार हिन्दी का भविष्य अति उज्ज्वल है तथा हिन्दी में भी कॅरियर बनाया जा सकता है किंतु यह एक कटु सत्य है कि भविष्य में शिक्षण संस्थानों के अंतर्गत समस्त पाठ्य-सामग्री हिन्दी माध्यम में मिलना संभव नहीं है। हाँ, के.जी. से पी.जी. तक हिन्दी विषय को अनिवार्य रूप से पढ़ाया जा सकता है, जिससे हिन्दी सीखने की उत्सुकता में उत्तरोत्तर वृद्धि होगी। अब वो दिन दूर नहीं जब स्पोकन इंग्लिश संस्थाओं का स्थान, स्पोकन हिन्दी ले लेगा। आज भी 'ईनाडु' आदि समाचार पत्रों में स्पोकन हिन्दी कक्षाओं का विज्ञापन प्रकाशित हो रहा है। अत: आइये, हम सब हिन्दी के भविष्य को सुनहरा

हिन्दी मिलाप 11.11.2017

हिन्दी महाविद्यालय में हुआ अतिथि व्याख्यान

दराबाद, 10 नवंबर-(मिलाप ब्यूरो) न्दी महाविद्यालय के संस्कृत विभाग रा अतिथि व्याख्यान का आयोजन या गया।

आज यहाँ जारी प्रेस विज्ञप्ति के नुसार, संस्कृत शोध संस्थान, हैदराबाद श्वविद्यालय में कार्यरत डॉ. अनुपमा ने डिग्री द्वितीय वर्ष के नवीन पाठ्यक्रम पर प्रकाश डाला। अभिज्ञान शाकुंतल, कादम्बरी, केनोपनिषद् से संग्रहित पाठों पर विचार व्यक्त करते हुए सेमिस्टर परीक्षाओं में किस प्रकार प्रश्नों का उत्तर दिया जाए? उन्होंने इसकी भी जानकारी दी। साथ ही कवि कालीदास, बाणभट्ट के काव्यों पर समीक्षा प्रस्तुत की। अवसर पर प्राचार्य पी. गिरिधर ने कहा कि आज नासा में संस्कृत ग्रंथों पर विशेष रूप से शोध कार्य हो रहा है, जो गर्व का विषय है। उन्होंने मुख्य वक्ता का शॉल व श्रीफल द्वारा सम्मान किया। डिग्री प्रथम वर्ष की छात्रा ने अतिथि व्याख्याता का पुष्पमाला से स्वागत किया। डिग्री द्वितीय वर्ष के छात्र नितिश ने प्रशस्ति-पत्र भेंट किया। इससे पूर्व बी.ए. द्वितीय वर्ष की छात्रा नंदिनी ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत की। संस्कृत विभाग की अध्यक्ष डॉ. मुक्तावाणी ने अतिथि डॉ. अनुपमा का परिचय दिया। राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

Class-room Seminars:

Department of Sanskrit, HMV also conducted class-room seminars for the students. These are developing the knowledge, improving communication skills in Sanskrit and curious nature to know mythological stories, itihasas, puranas in students.

TEACHING – LEARNING PROCESS:

- In the beginning of the Academic year the department plans and organizes Teaching-Learning and Evaluation Plan of the Academic year.
- As part of the teaching-learning process the department has adopted the following Student Centric activities in addition to Lecture method to improve the student learning.

STUDENT CENTRIC ACTIVITIES

- Student seminars and Assignments
- Student projects

- Study tours
- Group discussion

EVALUATION PROCESS:

Continuous evaluation of the students is done by

- Assignments
- Internal Assessments
- Conducting Students Seminars
- Semester Examinations
- Academic Audit

STUDENTSUPPORT AND PROGRESSION:

- The students are provided with sets of previous year's question papers
- Our alumni members are working in different organizations in various positions and some are engaged in the self employment.
- Students are given Library books for all the subjects, which aids in their learning process.
- Students are provided with access to N-List facility
- Providing study material to the students.
- Soft skills, Communication skills, Analytical skills
- Concessional bus pass and train pass facility

FUTURE PLAN OF THE DEPARTMENT

- To organize a National level seminar.
- To organize more number of Guest lectures.
- Invite eminent scholars for guest lectures.
- Field trip.
- PG entrance coaching.